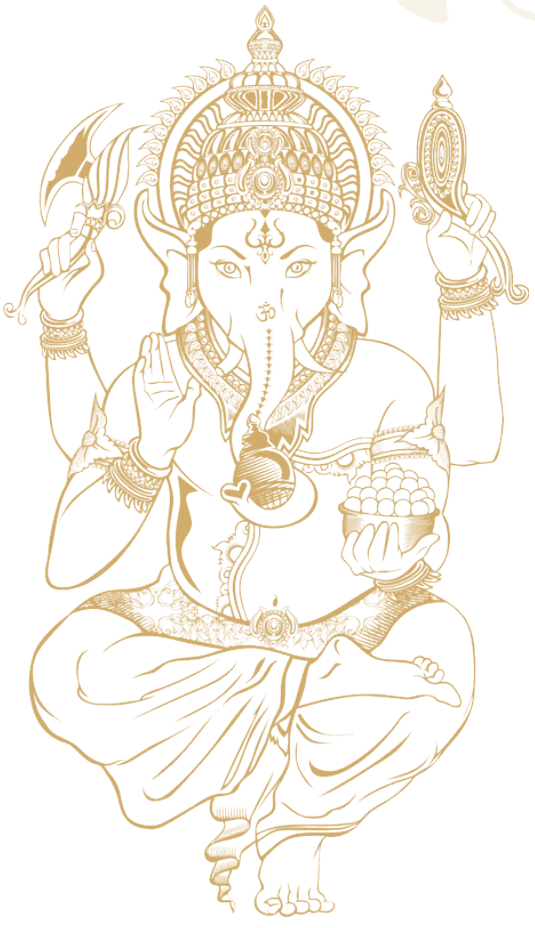

Mr.Devank singhaniya

Ms.Yashika Agarwal

Model: Web-FreeMatching

Order No: 121014502

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
14/02/2002	जन्म तिथि	7-08/04/2000
गुरुवार	दिन	शुक्र-शनिवार
घंटे 09:26:00	जन्म समय	02:19:00 घंटे
घटी 06:45:29	जन्म समय(घटी)	50:31:15 घटी
India	देश	India
Hyderabad	स्थान	Hyderabad
17:22:00 उत्तर	अक्षांश	17:22:00 उत्तर
78:26:00 पूर्व	रेखांश	78:26:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:16:16	स्थानिक संस्कार	-00:16:16 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:43:48	सूर्योदय	06:06:29
18:16:53	सूर्यास्त	18:30:32
23:52:56	चित्रपक्षीय अयनांश	23:51:23

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
गुरु 14वर्ष 1मा 25दि		20:28:11	मीन	लग्न	मक	14:58:27	सूर्य 2वर्ष 0मा 16दि	
शनि		01:23:35	कुंभ	सूर्य	मीन	24:28:38	राहु	
10/04/2016		21:32:24	कुंभ	चंद्र	वृष	05:27:14	25/04/2019	
11/04/2035		25:05:02	मीन	मंगल	मेष	17:40:03	25/04/2037	
शनि	14/04/2019	06:21:13	मक	बुध	कुंभ	28:44:30	राहु	05/01/2022
बुध	22/12/2021	12:08:09	मिथु व	गुरु	मेष	16:52:57	गुरु	31/05/2024
केतु	31/01/2023	08:45:39	कुंभ	शुक्र	मीन	07:29:26	शनि	07/04/2027
शुक्र	01/04/2026	14:11:03	वृष	शनि	मेष	22:26:44	बुध	24/10/2029
सूर्य	14/03/2027	01:20:10	मिथु व	राहु व	कर्क	06:16:13	केतु	12/11/2030
चन्द्र	13/10/2028	01:20:10	धनु व	केतु व	मक	06:16:13	शुक्र	11/11/2033
मंगल	21/11/2029	00:57:47	कुंभ	हर्ष	मक	26:04:06	सूर्य	06/10/2034
राहु	27/09/2032	15:12:09	मक	नेप	मक	12:27:40	चन्द्र	06/04/2036
गुरु	11/04/2035	23:24:50	वृश्चि	प्लूटो व	वृश्चि	18:53:43	मंगल	25/04/2037

लग्न-चलित

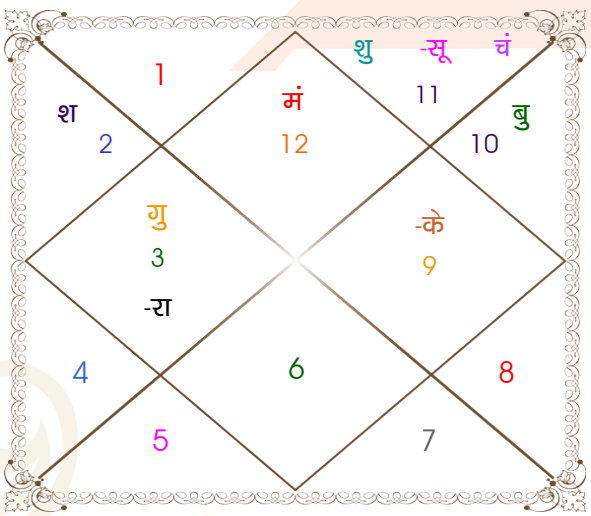

लग्न-चलित

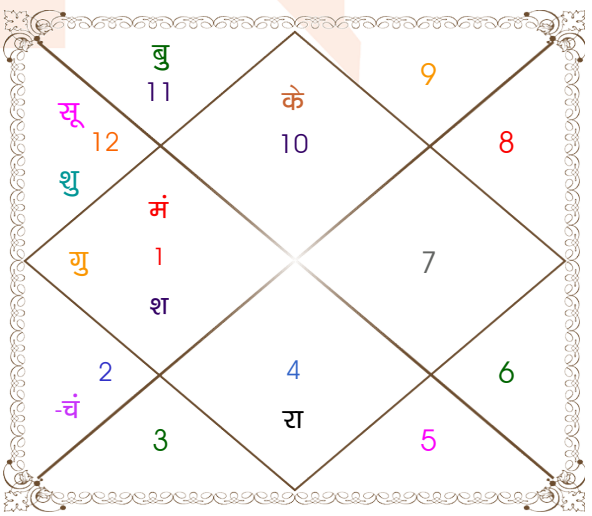

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	शूद्र	वैश्य	1	0.00	--	जातीय कर्म
वश्य	मानव	चतुष्पाद	2	1.00	--	स्वभाव
तारा	प्रत्यारि	साधक	3	1.50	--	भाग्य
योनि	सिंह	मेष	4	1.00	--	यौन विचार
मैत्री	शनि	शुक्र	5	5.00	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	कुम्भ	वृष	7	7.00	--	जीवन शैली
नाड़ी	आद्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	23.50		

गणदोष प्रभावहीन है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता है।

डतण्क्मअंदा`पदहींदपलं का वर्ग मेष है तथा डेण्लैपां ।हंतूंस का वर्ग गरूड़ है। इन दोनों वर्गो में परस्पर सम है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्क्मअंदा`पदहींदपलं और डेण्लैपां ।हंतूंस का मिलान अत्युत्तम है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्क्मअंदा`पदहींदपलं मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में प्रथम भाव में स्थित है।

डेण्लैपां ।हंतूंस मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है।

चतुः सप्तमे भौमो मेषकर्कटे निग्रहः।
कुजदोषो न विद्यते।।

अर्थात् चतुर्थ तथा सप्तम भाव में यदि मेष या कर्क का मंगल हो तो कुजदोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेण्लैपां ।हंतूंस कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेण्लैपां ।हंतूंस कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

कुजजीवो समायुक्तो युक्तो व कुजचन्द्रमा।
न मंगली मंगल राहु योग।

यदि मंगल-गुरु या मंगल-राहु या मंगल-चंद्र एक राशि में हों तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल एवं गुरु डेण्लैपां ।हंतूंस कि कुण्डली में एक राशि में हैं अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

शनिभौमोऽथवा कश्चित् पापो वा तादृशो भवेत्।
तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत्।।

यदि एक की कुंडली में जहां मंगल हो उन्हीं स्थानों पर दूसरे की कुंडली में प्रबल पाप ग्रह (राहु या शनि) हों तो मंगलीक दोष कट जाता है।

क्योंकि राहु डतण्क्मअंदा`पदहींदपलं कि कुण्डली में चतुर्थ भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डतण्क्मअंदा`पदहींदपलं कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्क्मअंदा`पदहींदपलं तथा डेण्लैपां ।हंतूंस में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

अष्टकूट एवं मंगलीक दोष न होने के कारण दोनों का मिलान उत्तम हैं।